Unit – 5 { Language Across the curriculum

* पठन रूपरेखा का निर्माण करना (Building Schema of Reading to Learn) :—

स्कीमा :—

स्कीमा से तात्पर्य ऐसी मानसिक संरचना से है जो व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क में सूचनाओं को संगठित तथा व्याख्या करने हेतु विद्यमान होती है। यह स्कीमा दो प्रकार का होता है :—

(i) साधारण स्कीमा
(ii) जटिल स्कीमा

साधारण स्कीमा से तात्पर्य आस-पास विद्यमान वस्तुओं से है जैसे कुर्सी, टेबल, मेज, मोटरगाड़ी इत्यादि।
जटिल स्कीमा से तात्पर्य है, पृथ्वी के निर्माण प्रक्रिया के बारे में या फिर अंतरिक्ष के निर्माण के बारे में जानकारी प्राप्त करना जटिल स्कीमा के अंतर्गत आता है।

स्कीमा शब्द का पहली बार प्रयोग 'बार्लेट' द्वारा सन् 1932 में किया गया जिसमें उसने स्कीमा को 'पूर्व प्रतिक्रियाओं एवं अनुभवों का सक्रिय संगठन कहकर प्रतिपादित किया।

भाषा के सन्दर्भ में स्कीमा सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए जो सबसे महत्वपूर्ण बात कही जाती है वह यह है कि लिखा हुआ कोई भी वाक्य या वाक्यों के समूह 'अपने आप में कोई विशेष अर्थ नहीं रखता है।' बल्कि वह तो केवल एक दिशा की तरफ इंगित करता है जिससे पाठक स्वयं उसके अर्थ का निर्माण कर सके। पाठक अपने पूर्वज्ञान के आधार पर उस वाक्यांश

Scanned with CamScanner

का अर्थ ग्रहण करता है। यह प्रारम्भिक पाठक का पूर्व ज्ञान एवं ज्ञान संरचना स्कीमेटा के नाम से जाना जाता है।

स्कीमेटा के प्रकार :—

(i) औपचारिक स्कीमेटा
(ii) विषयवस्तु सम्बन्धी स्कीमेटा
(iii) सांस्कृतिक स्कीमेटा
(iv) भाषाई स्कीमेटा

(i) औपचारिक स्कीमेटा :— औपचारिक स्कीमेटा से तात्पर्य विभिन्न प्रकार के आलंकारिक संरचनात्मक वाक्यांशों के सन्दर्भ का पूर्व ज्ञान से है। यदि दूसरे शब्दों में कहा जाए तो औपचारिक का स्कीमों से तात्पर्य विभिन्न प्रकार के संप्रत्ययों के प्रस्तुतीकरण से है। विभिन्न प्रकार के पाठ जैसे कहानियों, पत्र, भाषण, कविताएँ, गद्यांश आदि की पहचान एक दूसरे से भिन्नता के आधार पर ही होता है। इनके आधार में निहित संरचना है, उसे औपचारिक स्कीमेटा कहा जाता है।

(ii) विषयवस्तु सम्बन्धी स्कीमेटा :— विषयवस्तु सम्बन्धी स्कीमेटा से मूलतः वाक्यांश के विषयवस्तु सम्बन्धी पृष्ठभूमि ज्ञान से सम्बन्धित है इसका जुड़ाव किसी शीर्षक विशेष के संप्रत्ययात्मक ज्ञान एवं सूचना है जो कि एक व्यवस्थित तरीके से जुड़ा हुआ है। विषयवस्तु सम्बन्धी स्कीमेटा विशेष घटनाओं एवं वस्तुओं का एक खुला सेट होता है। उदाहरण के लिए यदि हम किसी रेस्तरां में उपलब्ध सर्विस, मीनू विभिन्न प्रकार के भोजन का ऑर्डर देना, बिल अदा करना, टिप देना आदि की

Scanned with CamScanner

सूचना से होगा। विषय वस्तु सम्बन्धी स्कीमेटा सांस्कृतिक बाध्य होता है इसलिए सांस्कृतिक स्कीमा को सामान्यतया विषयवस्तु स्कीमा में वर्गीकृत किया जाता है।

3. सांस्कृतिक स्कीमेटा — जॉनसन एवं कैरेली के अध्ययनों ने इस बात को पुष्ट किया है कि किसी पाठ में निहित सांस्कृतिक ज्ञान पाठक के स्वयं के सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से पाठ का वाक्यांश के मुकाबले समझना सहज एवं आसान होता है। विभिन्न सांस्कृतिक समूह उसी पाठ या वाक्यांश को अलग-अलग समझते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं। किसी पाठ को पूर्ण रूप से समझने के लिए उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की समझ अति आवश्यक है।

4. भाषाई स्कीमेटा :— भाषाई स्कीमा का सम्बन्ध व्याकरण एवं शब्दों के ज्ञान से है। यह किसी भी पाठ को समझने में अति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

इस्की (1988) के अनुसार - अच्छे पाठक किसी पाठ-विशेष को अच्छी तरह व्याख्यायित करने के साथ-साथ उसे अच्छी तरह से डिकोड भी करते हैं। बिना अच्छी डिकोडिंग दक्षता के कोई भी अच्छा पाठक बन ही नहीं सकता है।

Scanned with CamScanner

स्कीमेटा की प्रकृति :- (Nature of Schemata)

स्कीमा सिद्धान्त की मूल धारणा यह है कि मानव स्मृति मूलतः शब्दार्थ की तरह व्यवस्थित है न कि वर्णमाला क्रमों के अनुसार

↑
partial Sematic Network of chair

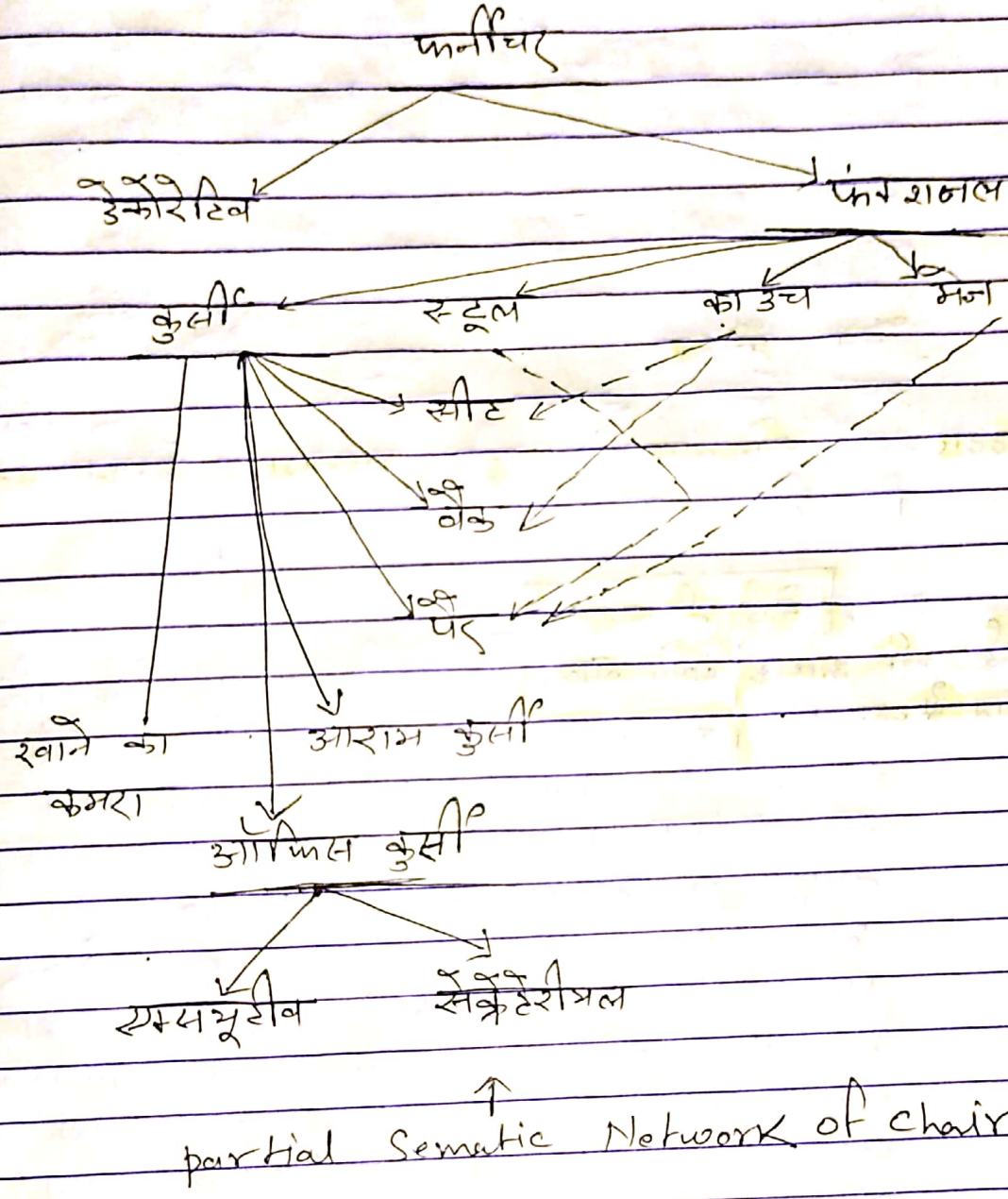

इसके अलावा स्मृति एक थेसारस की तरह व्यवस्थित है न कि एक शब्दकोष की तरह। कोई भी व्यक्ति विशेष प्रत्येक तरह की वस्तु की तरह स्कीमेटा रखता है चाहे वह वस्तु दिखने में साधारण हो या विकट हो। जैसे व्यक्ति कलम,

फुटबॉल या चश्मा का स्कीमेटा रखता है वैसा ही वह प्यार (Love), क्रोध या फिर जलन जैसे सम्प्रत्ययों का स्कीमेटा भी रखता है।

किसी भी वस्तु को कुर्सी कहे जाने के लिए कोई निश्चित गुण या विशेषताएँ होती हैं। जैसे कि एक कुर्सी में एक सीट, दो हैंडिल एवं बैक काउच होना अनिवार्य है। तभी उसे कुर्सी कह सकते हैं। इसी तरह से घर की कुर्सी ऑफिस की कुर्सी, डाइनिंग कमरे की कुर्सियों के अलग-अलग गुण होंगे। अमूर्त सत्ताओं जैसे प्रेम, क्रोध, जलन इत्यादि जैसे के लिए स्कीमेटा संप्रत्ययों की तरह न होकर बिम्बों की तरह होती है।

* पठन कौशल :—

अंग्रेजी भाषा के रीडिंग शब्द के लिए हिन्दी में दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है — पठन एवं वाचन। पठन एवं वाचन इन दोनों में मूलतः भेद है। पठन का अर्थ है — जोर से तथा मौन होकर पढ़ना जिससे पठित सामग्री समझ में आ जाए। पठन के अन्तर्गत सस्वर तथा मौन वाचन आ जाता है। वाचन का उद्देश्य होता है कि वाचन करने वाला स्वयं वाचन का आनन्द उठाए इसके साथ-साथ अपने मानसिक विकास में भी गति उत्पन्न करे। वाचनकर्ता पठित सामग्री के भाव को समझकर दूसरों को समझा सके। यह पठन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है।

Scanned with CamScanner

* पठन शिक्षा का महत्व !—

वर्तमान युग में पठन शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ गया है। आज वैचारिक आदान-प्रदान, विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करने एवं विश्व भर की जानकारी तथा छात्रों के संवेगात्मक तथा मानसिक विकास की दृष्टि से पठन कौशल का विकास अनिवार्य हो गया है। इसके आभाव में लेखन, वाचन एवं बोध सामर्थ्य का विकास असम्भव है।

अतः शिक्षकों को बालकों में पठन-कौशल में प्रवीण बनाने का प्रयास करना चाहिए।

Scanned with CamScanner